केरल (दक्षिण भारत) के गुरूवायुर स्थित
सुविख्यात श्रीकृष्ण मन्दिर से सन्देश
फरवरी १६, २०००

सन्देश संख्या २०

विचारों से उत्पन्न बनावटी शान्ति उत्तेजना का ही एक विपरीत रूप

विचारों से उत्पन्न बनावटी शान्ति उत्तेजना का ही मात्र एक विपरीत रूप है। जब उत्तेजना और शान्ति के विरोधाभास से हम मुक्त होते हैं तभी हमें यथार्थ शान्ति प्राप्त होती है जो कि तथाकथित ''आध्यात्मिक अन्वेषकों'' की पहुँच के परे है क्योंकि वे ''प्रबोध'' प्राप्ति के लिये तरह–तरह की प्रणाली एवं प्रविधि इकट्ठा करते रहने में ही व्यस्त रहते हैं।

अनुभव के रूप में सुख और दुःख दोनों को ही वास्तविक सुख के लिये समाप्त हो जाना चाहिए जो कि आध्यात्मिक मण्डी में मटरगश्ती करने वाले ''अन्वेषकों'' की भीड़ के लिये उपलब्ध नहीं है।

आपकी जीवन शैली, महत्वाकांक्षा तथा भय के कारण दबाव और तनाव, उत्तेजना एवं हलचल जिस द्वार के माध्यम से आपके अन्दर प्रवि होते हैं – वह इन सभी के निकास का भी द्वार है। विभिन्न प्रणालियों के माध्यम से समझदारी की ऊर्जा को न किये बिना कृपया प्रारम्भ में ही इसे हृदयंगम कर लें। अहंकार का ऐसा कोई कृत्य अथवा अकृत्य नहीं हो सकता जो हमें ईश्वरत्व तक पहुँचा दे। अहंकार की समाप्ति ही नमस्कार की शुरूआत है। आत्म–केन्द्रित गतिविधियाँ चाहे वे कितनी ही सूक्ष्म क्यों न हों दुर्गति की ओर ही ले जाने वाली हैं। ''निर्मन'' की स्थिति ही सार–तत्व है।

अहंकार की वृत्तियों की समझदारी के बिना उन ''तकनीकों'' का व्यर्थ अन्वेषण एवम् उसमें आसक्ति आपको, अन्ततः उन मानसिक प्रदूषकों की ओर ले जायेगी जो भ्रान्ति ड्गैलाने वाले बहिर्मुखी तत्व हैं तथा प्रचार मूलक क्रिया कलापों द्वारा लाहिड़ी महाशय के नाम पर सरल हृदय, भावुक एवम् आशुविश्वासी लोगों को भ्रमित करते रहते हैं। वे दावा करते हैं कि पिता द्वारा पुत्र को क्रिया योग–वंश परम्परा जारी रखने को कहना सत्य नहीं है और वे ही एक मात्र ''अधिकृत'' उत्तराधिकारी हैं। इस ओछी मानसिकता ने लाहिड़ी महाशय को ''भगवान्'' बना दिया है और इस प्रकार एक पावन आध्यात्मिक प्रक्रिया को एक क्षुद्र व्यक्तित्व में सीमित कर दिया है। लाहिड़ी परिवार उनकी गतिविधियों से निराश एवं विरक्त हैं।

आध्यात्मिक मण्डी के उन संचालकों से सावधान रहें जिनके विवेकबुद्धि के तन्तु उनकी विखण्डनकारी स्वार्थपरक गतिविधियों द्वारा क्षतिग्रस्त हो गये हैं।

लाहिड़ी महाशय के क्रिया–गंगोत्री की जय।